# मन्दिर खुलने का समय

## रविवार से शुक्रवार तक

- सुबह : 8:30 - 11:30 बजे | आरती : 10-00 बजे
- शाम : 5:00 - 6:30 बजे | आरती : 6-00 बजे

## शनिवार

- सुबह : 8:30 - 12:00 बजे | आरती : 10-00 बजे
- शाम : 5:30 - 8:30 बजे

## MANDIR OPENING TIME

### *Sunday to Friday*

*Morning : 8:30-10:30 A.M. Aarti : 10 A.M.*
*Evening : 5:30-6:30 P.M. Aarti : 6 P.M.*

### *Saturday*

*Morning : 8:30-12:00 P.M. Aarti : 10 A.M.*
*Evening : 5:30-8:00 P.M. Aarti : 6 P.M.*


Address

**S.E.H.A. (RAM MANDIR)**

2, ANGLESEA AVENUE
OFF. ANGLESEA ROAD
WOOLWICH (LONDON) S.E. 18 6ER
TEL : 0208 854 4906

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. | श्री राम चालीसा | 3 |
| 2. | श्री हनुमान चालीसा | 5 |
| 3. | श्री शिव चालीसा | 7 |
| 4. | गायत्री मंत्र | 9 |
| 5. | भोग ( श्याम रसिया मोरे ) | 9 |
| 6. | प्रार्थना ( सुखी बसे संसार सब ) | 10 |
| 7. | विष्णु भगवान की स्तुति | 11 |
| 8. | आरती ( ओम् जय जगदीश हरे ) | 11 |
| 9. | मंत्रो - आरती के बाद | 12 |
| 10. | भजमन ( श्री रामचंद्र कृपालु भजमन ) | 13 |
| 11. | भगवान को प्रार्थना ( तुम्हारे हाथो में ) | 14 |
| 12. | अच्युतम् केशवम् | 14 |
| 13. | मंगलाचरण | 15 |
| 14. | कथा प्रारंभे स्मरण | 16 |
| 15. | मंगल श्लोको | 17 |
| 16. | कथा विसर्जन श्लोको | 18 |
| 17. | अंजलि गीत | 19 |
| 18. | मा-बापने भूलशो नहीं | 20 |

# श्री राम चालीसा

श्री रघुबीर भक्त हितकारी, सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी
निशि दिन ध्यान धरे जो कोई, ता सम भक्त और नहीं होई
ध्यान धरे शिवजी मन मांही, ब्रह्मा इन्द्र पार नहीं पाहीं
जय, जय, जय, रघुनाथ कृपाला, सदा करो सन्तन प्रतिपाला
दूत तुम्हार वीर हनुमाना, जासु प्रभाव तिहूँ पुर जाना
तुव भुजदण्ड प्रचण्ड कृपाला, रावण मारि सुरन प्रतिपाला
तुम अनाथ के नाथ गोसाई, दीनन के हो सदा सहाई
ब्रह्मादिक तव पार न पावैं, सदा ईश तुम्हरो यश गावैं
चारिउ वेद भरत हैं साखी, तुम भक्तन की लज्जा राखी
गुण गावत शारद मन माहीं, सुरपति ताको पार न पाहीं
नाम तुम्हारा लेत जो कोई, ता सम धन्य और नहिं होई
राम नाम है अपरम्पारा, चारिहु वेद न जाहि पुकारा
गणपति नाम तुम्हारो लीन्हों, तिनको प्रथम पूज्य तुम कीन्हों
शेष रटत नित नाम तुम्हारा, महि को भार शीश पर धारा
फूल समान रहत सो भारा, पावत कोउ न तुम्हरो पारा
भरत नाम तुम्हरो उर धारो, तासों कबहुँ न रण में हारो
नाम शत्रुहन हृदय प्रकाशा, सुमिरत होत शत्रु कर नाशा
लषन तुम्हारे आज्ञाकारी, सदा करत सन्तन रखवारी
ताते रण जीते नहिं कोई, युद्ध जुरे यमहूँ किन होई
महा लक्ष्मी धर अवतारा, सब विधि करत पाप को छारा
सीता राम पुनीता गायो, भुवनेश्वरी प्रभाव दिखायो
घट सों प्रकट भई सो आई, जाको देखत चन्द्र लजाई
सो तुमरे नित पांव पलोटत, नवो निद्धि चरणन में लोटत
सिद्धि अठारह मंगल कारी, सो तुम पर जावै बलिहारी

औरहु जो अनेक प्रभुताई, सो सीतापति तुमहिं बनाई
इच्छा ते कोटिन संसारा, रचत न लागत फल की बारा
जो तुम्हरे चरनन चित लावै, ताको मुक्ति अवसि हो जावै
जय जय जय प्रभु ज्योति स्वरूपा, निर्गुण ब्रह्म अखण्ड अनूपा
सत्य सत्य जय सत्य-व्रत स्वामी, सत्य सनातन अन्तर्यामी
सत्य भजन तुम्हरो जो गावै, सो निश्चय चारों फल पावै
सत्य शपथ गौरीपति कीन्हीं, तुमने भक्तहिं सब सिधि दीन्हीं
सुनहु राम तुम तात हमारे, तुमहिं भरत कुल-पूज्य प्रचारे
तुमहिं देव कुल देव हमारे, तुम गुरू देव प्राण के प्यारे
जो कुछ हो सो तुमहीं राजा, जय जय जय प्रभु राखो लाजा
राम आत्मा पोषण हारे, जय जय जय दशरथ के प्यारे
ज्ञान हृदय दो ज्ञान स्वरूपा, नमो नमो जय जगपति भूपा
धन्य धन्य तुम धन्य प्रतापा, नाम तुम्हार हरत संतापा
सत्य शुद्ध देवन मुख गाया, बजी दुन्दुभी शंख बजाया
सत्य सत्य तुम सत्य सनातन, तुमहीं हो हमरे तन मन धन
याको पाठ करे जो कोई, ज्ञान प्रकट ताके उर होई
आवागमन मिटै तिहि केरा, सत्य वचन माने शिव मेरा
और आस मन में जो होई, मन वांछित फल पावे सोई
तीनहुँ काल ध्यान जो ल्यावै, तुलसी दल अरु फूल चढावै
साग पत्र सो भोग लगावै, सो नर सकल सिद्धता पावै
अन्त समय रघुबर पुर जाई, जहां जन्म हरि भक्त कहाई
श्री हरि दास कहै अरु गावै, सो बैकुण्ठ धाम को पावै

## दोहा

सात दिवस जो नेम कर, पाठ करे चित्त लाय
हरिदास हरिकृपा से, अवसि भक्ति को पाय
राम चालीसा जो पढे, रामचरण चित्त लाय
जो इच्छा मन में करै, सकल सिद्ध हो जाय

# श्री हनुमान चालीसा

## दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि
बरनऊं रघुबर बिमल जस, जो दायकु फल चारि
बुद्धिहिन तनु जानिकै सुमिरौं पवन कुमार
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार

## चोपाई

जय हनुमान ज्ञान गुणसागर, जय कपीस तिहुं लोह उजागर
रामदूत अतुलित बल धामा, अंजनि पुत्र पवनसुत नामा
महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी
कंचन बरन विराज सुवेसा, कानन कुण्डल कुन्चित केसा
हाथ बज्र औ ध्वजा विराजै, काँधे मूँज जनेउ साजै
शंकर सुवन केसरी नन्दन, तेज प्रताप महा जग वन्दन
विद्यावान गुणी अति चातुर, राम काज करिबे को आतुर
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया, राम लषन सीता मन बसिया
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा, विकट रूप धरि लंक जरावा
भीम रूप धरि असुर संहारे, रामचन्द्र को काज संवारे
लाय संजीवन लखन जियाये, श्री रघुबीर हरषि उर लाये
रघुपति कीन्हीं बहुत बडाई, तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई
सहस्त्र बदन तुम्हरो यश गावैं, अस कहि श्रीपति कंठ लगावै
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा, नारद सारद सहित अहीसा
यम कुबेर दिगपाल जहां ते, कवि कोविद कहि सके कहाँ ते
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा, राम मिलाय राजपद दीन्हा
तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना, लंकेश्वर भये सब जग जाना
जुग सहस्त्र योजन पर भानू, लील्यो ताहि मधुर फल जानू

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही, जलधिलांघि गए अचरज नाहीं
दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते
राम दुआरे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिनु पैसारे
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना, तुम रक्षक काहू को डरना
आपन तेज सम्हारो आपै, तीनों लोक हांक ते कांपै
भूत पिसाच निकट नहिं आवै, महाबीर जब नाम सुनावै
नासै रोग हरे सब पीरा, जपत निरंतर हनुमत बीरा
संकट ते हनुमान छुडावै, मन क्रम वचन ध्यान जो लावै
सब पर राम तपस्वी राजा, तिनके काज सकल तुम साजा
और मनोरथ जो कोई लावै, सोई अमित जीवन फल पावै
चारों जुग परताप तुम्हारा, है परसिद्ध जगत उजियारा
साधु सन्त के तुम रखवारे, असुर निकंदन राम दुलारे
अष्ट सिद्धि नौ निधिके दाता, अस वर दीन जानकी माता
राम रसायन तुम्हरे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा
तुम्हरे भजन राम को पावै, जन्म जन्म के दुःख बिसरावै
अन्त काल रघुबर पुर जाई, जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई
और देवता चित्त न धरई, हनुमत सेइ सर्व सुख करई
संकट कटै मिटै सब पीरा, जो सुमिरै हनुमत बलबीरा
जय जय जय हनुमान गोसाई, कृपा करहु गुरुदेव की नाई
जो सत बार पाठ कर कोई, छूटहि बँदि महासुख होई
जो यह पढै हनुमान चालीसा, होय सिद्धि साखी गौरीसा
तुलसीदास सदा हरि चेरा, कीजै नाथ हृदय मँह डेरा

## दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सूर भूप ॥ इति
॥ सियावर रामचंद्र की जे ॥

# श्री शिव चालीसा

## दोहा

जय गणेश गिरिजासुवन, मंगल मूल सुजान
कहत अयोध्यादास तुम, देउ अभय वरदान

## चोपाई

जय गिरिजापति दीनदयाला, सदा करत सन्तन प्रतिपाला
भाल चन्द्रमा सोहत नीके, कानन कुण्डल नाग फनी के
अंग गौर शिर गंग बहाये, मुण्डमाल तन क्षार लगाये
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे, छवि को देखि नाग मन मोहे
मैना मातु कि ह्वे दुलारी, वाम अंग सोहत छवि न्यारी
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी, करत सदा शत्रुन क्षयकारी
नंदि गणेश सोहैं तहं कैसे, सागर मध्य कमल हैं जैसे
कार्तिक श्याम और गणराऊ, या छवि कौ कहि जात न काऊ
देवन जबहीं जाय पुकारा, तबहिं दुःख प्रभु आप निवारा
किया उपद्रव तारक भारी, देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी
तुरत षडानन आप पठायउ, लव निमेष महं मारि गिरायउ
आप जलंधर असुर संहारा, सुयश तुम्हार विदित संसारा
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई, तबहिं कृपा कर लीन बचाई
किया तपहिं भागीरथ भारी, पुरव प्रतिज्ञा तासु पुरारी
दानिन महं तुम सम कोउ नाहीं, सेवक स्तुति करत सदाहीं
वेद माहि महिमा तुम गाई, अकथ अनादि भेद नहीं पाई
प्रकटे उदधिमंथन में ज्वाला, जरत सुरासुर भए विहाला
कीन्ह दया तहं करी सहाई, नीलकंठ तब नाम कहाई
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हां, जीत के लंक विभीषण दीन्हा
सहस कमल में हो रहे धारी, कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी

एक कमल प्रभु राखेउ जोई, कमल नयन पूजन चहं सोई
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर, भये प्रसन्न दिए इच्छित वर
जय जय जय अनंत अविनाशी, करत कृपा सबके घट वासी
दुष्ट सकल नित मोहि सतावैं, भ्रमत रहौं मोहे चैन न आवैं
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो, यह अवसर मोहि आन उबारो
ले त्रिशूल शत्रुन को मारो, संकट से मोहिं आन उबारो
मात-पिता भ्राता सब कोई, संकट में पूछत नहिं कोई
स्वामी एक है आस तुम्हारी, आय हरहु मम संकट भारी
धन निर्धन को देत सदा ही, जो कोई जांचे सो फल पाही
अस्तुति केहि विधिकरैं तुम्हारी, क्षमहु नाथ अब चूक हमारी
शंकर हो संकट के नाशन, मंगल कारण विघ्न विनाशन
योगि यति मुनि ध्यान लगावैं, शारद नारद शीश नवावैं
नमो नमो जय नमः शिवाय, सुर ब्रह्मादिक पार न पाये
जो यह पाठ करे मन लाई, ता पर होत हैं शम्भु सहाई
ऋनियां जो कोई हो अधिकारी, पाठ करे सो पावन हारी
पुत्र होन की इच्छा जोई, निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई
पण्डित त्रयोदशी को लावे, ध्यान पूर्वक होम करावे
त्रयोदशी व्रत करै हमेशा, तन नहिं ताके रहै कलेशा
धूप दीप नैवेद्य चढावे, शंकर सम्मुख पाठ सुनावे
जन्म-जन्म के पाप नसावे, अन्त धाम शिवपुर में पावे
कहँ अयोध्यादास आस तुम्हारी, जानि सकल दुःख हरहु हमारी

## दोहा

नित्त नेम उठि प्रातही, पाठ करो चालीस
तुम मेरी मनकामना पूर्ण करो जगदीश
मंगसर छठि हेमन्त ऋतु, संवत चौसठ जान
स्तुति चालीसा शिवहि, पूर्ण कीन कल्यान

॥ उमापति महादेव की जै ॥

# गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितु वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियौ यो नः प्रचोदयात् ॥

# भोग

श्याम रसिया मोरे मन वसिया
रूच रूच भोग लगावो रसिया

शबरी के बेर सुदामा के तान्दूल (२)
प्रेम से भोग लगावो रसिया....

दूर्योधन के मेवा त्यागे (२)
साग विदूर घर खायो रसिया....

नरसी भगत की हुन्डी स्वीकारी (२)
शामलशा बन आयो रसिया....

ऐसा भोग लगावो रसिया/मोहन (२)
प्रेमार्मित बन जावे रसिया....

जो कोई इस भोग को पावे (२)
वो तेरो बन जाये रसिया....

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर (२)
आकर दर्श दिखावो रसिया....

रसिया ओ रसिया, मेरे मन बसिया
श्याम रसिया मोरे मन बसिया....

# प्रार्थना

सुखी बसे संसार सब, दु:खिया रहे ना कोये
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवान पूरी होये

विद्या बुद्धि तेज बल, सब के भीतर हो
दूधपूत धन धान्य से, वंचित रहे ना कोये

आपकी भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर
राग द्वेष से चित मेरा, कोसो भागे दूर

मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश
आशा तेरे नाम की, बनी रहे मम ईश

पाप से हमें बचाईये, करके दया दयाल
अपना भगत बनाईके सबको करो निहाल

दिल में दया उदारता, मन में प्रेम और प्यार
हृदय में धैर्य वीरता, सब को दो करतार

नारायन तुम आप हो, पाप के मोचन हार
क्षमा करो अपराधसब, कर दो भव से पार

हाथ जोड बिनती करे, सुनिये कृपा निधान
साधु संगत सुख दीजिये, दया नम्रता दान

सुखी वसे संसार सब, दु:खिया रहे न कोये
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवान पूरी होये ॥

# विष्णु भगवान की स्तुति

शान्ताकारं भुजंग-शयनं पद्मनाभं सुरेशम्
विश्वाधारं गगन-सदृशं मेघवर्णम् शुभांगम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमल-नयनं योगिभिर्ध्यान गम्यम्
वन्दे विष्णुं भव भयहरं सर्वलौक कै नाथम् ॥

# आरती

ओम् जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे,
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे.... ओम् जय....

जो ध्यावै फल पावे, दुःख बिन से मनका प्रभु ( २ )
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तनका.... ओम् जय....

मात पिता तुम मेरे, शरण ग्रहु किसकी, प्रभु ( २ )
तुम बिन और न दूजा ( २ ) आश करूं में जिसकी.... ओम् जय....

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी, प्रभु ( २ )
परम ब्रह्म परमेश्वर ( २ ) तुम सबके स्वामी.... ओम् जय....

तुम करूणा के सागर, तुम पालनकर्ता, प्रभु ( २ )
मैं सेवक तुम स्वामी ( २ ) कृपा करो भर्ता.... ओम् जय....

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति, प्रभु ( २ )
किसविधमिलूं दयामय ( २ ) तुमको मैं कुमति.... ओम् जय....

दीनबंधु दुःखहर्ता, तुम रक्षक मेरे, प्रभु ( २ )
अपने हस्त बढाओ, द्वार पडा में तेरे... ओम् जय....

विषय विकार मिटावो, पाप हरो देवा ( २ )
श्रद्धा भक्ति बढावो, सन्तनकी सेवा.... ओम् जय....

तन, मन, धन सब है तेरा, प्रभु सबकुछ है तेरा,
तेरा तुजको अर्पण ( २ ) क्या लागे मेरा.... ओम् जय....

श्याम सुंदरकी आरती, जो कोई नर गावे, प्रभु ( २ )
कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे.... ओम् जय....

ओम् जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे,
भक्तजनों के संकट ( २ ) क्षण में दूर करे.... ओम् जय....

## आरती के बाद मंत्र

कर्पूरगौरं, करूणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्
सदा वसन्तं हृदयोर्विंदे भवभवानी सहितं नमामि ॥

मंगलं भगवान विष्णु मंगलं गरूड ध्वज
मंगलं पुण्डरिकाक्षं मंगलिय स्तनो हरि ।
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणी नमोस्तुते ।
यानि कानि च पापानि जन्मन्तरकृतानि चै ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बंधु च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविण त्वमेव
त्वमेव सर्वमम देव देव

काये न वाचा मनसेन्द्रियेर्वा, बुध्यात्मना व प्रकृति स्वभावात
करोमि यद्यत सकलं परस्मै, नारायणायेति समर्पयामि

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भागभवेत ॥

सब का भला करो भगवान, सब पर दया करो भगवान
सबको दो अपनी भक्ति का दान, सबका सब विधी हो कल्यान ।

ॐ द्यौः शांतिरन्तरिक्ष ॐ शांतिः पृथ्वी शांतिः
रापः शांतिः रोषद्यय: शांतिः वनस्पतय शांतिः
विश्वे देवाः शांतिः ब्रह्मा शांतिः सर्व गुण शांतिः
शांति रेव शांतिः सामा, शांति रे धिः
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

पूर्णमदः पूर्णमिदम् पूर्णातपूर्णमदच्येत्
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावासिस्येत्

## भजमन

श्रीरामचंद्र कृपालु भजमन, हरण भव भय दारूणं
नवकंज लोचन, कंजमुख, करकंज पद कंजारूणं....१

कंदर्प अगणित अमित, छबि नवनील नीरद सुंदरं
पटपीत मान हु तडित रूचि शुचि नौमि जनकसुतावरं....२

शिर मुकुट कुंडल तिलक चारू, उदार अंग विभूषणम्
आजानुभूज शरचापधर, संग्रामजीत खर दूषणं....३

भज दीनबंधु दिनेश दानव दैत्यवंश निकंदनं
रघुनंद आनंद कंद कौशलनंद दशरथ नंदनं....४

इति वदति तुलसीदास, शंकर शेष मुनिमन रंजनं
ममहृदयकुंज निवास करू, कामादिखलदल रंजनं....५

# भगवान की प्रार्थना

## तुम्हारे हाथो में

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में

मेरा निश्चय है बस एक यही, इकवार तुम्हें पा जाऊँ मैं
अर्पण करदूं दुनिया भरका, सब प्यार तुम्हारे हाथों

जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं, जो जल में कमल का फूल रहे
मेरे सब गुण दोष समर्पित हो, करतार तुम्हारे हाथों में

यदि मानव का मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी बनूं
इस पूजक की इक इक राग का, जो तार तुम्हारे हाथों में

जब जब संसार का बंदी बनूं, निष्काम भाव से कर्म करूं
फिर अन्त समय में प्राण तजूं, निराकार तुम्हारे हाथों में

मुझ में तुझ में बस भेद यही, मैं नर हुं तुम नारायण हो
मैं हुं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में
अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में

# सत्संग समाप्ति

अच्युतं केशवं श्री रामनारायणं,
श्री कृष्णदामोदरं श्री वासुदेवं हरिः
श्रीधरं माधवं, श्री गोपीनाथ वल्लभं
श्री जानकी नायकं, श्री रामचंद्र भजे

# मंगलाचरण

करारविन्दे पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बाल मुकुन्दं मनसा स्मरामि

श्रीकृष्ण गोविंद हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविन्द दामोदर माधवेति

विक्रेतु किल गोपकन्या मुरारीपादत्तिर्पित चित्तवृतिः
दध्यादिकं मोहवशादवोचद् गोविन्द दामोदर माधवेति

गृहे गृहे गोपवधू कदम्बाः सर्वे मिलित्वा समवाप्य योगम्
पुण्यानि नामानि पठन्ति नित्यं गोविन्द दामोदर माधवेति

सुखंशयाना निलयेनिजेऽपि नामानि विष्णोः प्रवदन्ति मर्त्या
ते निश्चितं तन्मयतां व्रजन्ति गोविन्द दामोदर माधवेति

जिह्वे सदैवं भज सुन्दराणि नामानि कृष्णस्य मनोहराणि
समस्त भक्तार्ति विनाशनानि गोविन्द दामोदर माधवेति

सुखावसाने त्विदमेव सारं दुःखावसाने त्विदमेव ज्ञेयम्
देहावसाने त्विदमेव जाप्यं गोविन्द दामोदर माधवेति

श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेश गोपाल गोवर्धननाथ विष्णो
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविन्द दामोदर माधवेति

जिह्वे रसज्ञे मधुरप्रिया त्वं सत्यं हितं त्वां परमं वदामि
आवर्णयेथा मधुराक्षराणि गोविन्द दामोदर माधवेति

तवामेव याचे मम देहि जिह्वे समागते दण्डधरे कृतान्ते
वक्तव्यमेवं मधुरं सुभक्त्या गोविन्द दामोदर माधवेति

# कथा प्रारंभे स्मरण

तुलसी कृत रामायण, कथा कहुं मति अनुसार
प्रेम सहित गादी धरूं, पधारीए पवनकुमार

आईये हनुमंत बिराजीए, कथा सुनो ईतिहास
तुम सेवक रघुनाथ के, में तुम चरन के दास

राम कथा के रसिक तुम, भक्तराज मतिधीर
आई सुआसन करिए प्रभु, तेज पुंज कपिवीर

श्री गुरूचरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार
वरणवुं रघुवीर विमल यश, जो दायक फल चारी

बुद्धिहीन तनुं जानीके, सुमीरहुं पवनकुमार
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेश विकार

वंदु तुलसी के चरण, जीन कीनो जग काज
कली समूह बुडत लख्यो, प्रगट्यो सत्य जहाज

सच्चिदानंद रूपाय, विश्वोत प्रत्यादि हेतवे
तापत्रय विनाशाय, श्रीकृष्णाय वयं नुमः

नमोऽस्तुते व्यास विशाल बुद्धे
फुल्लार विन्दायत पत्र नेत्रम् ।

येन त्वया भारत तैल पूर्णः
प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदिप ॥

## मंगल श्लोको

वसुदेवं सुतं देवं, कंसचाणुर मर्दनम् ।
देवकी परमानंदं, कृष्णं वंदे जगतगुरू ॥

मुकं करोति वाचालम्, पंगु लंघयते गिरिम् ।
यत्कृपा तुंम हमवंदै, परमानन्दः परमेश्वरम् ॥

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानम् धर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय, संभवामि युगे युगे ॥

गुरू ब्रह्माः गुरू विष्णुः गुरू देवो महेश्वर ।
गुरू साक्षात् परब्रह्मः तस्मै श्री गुरूवे नमः ॥

# कथा विसर्जन श्लोको

कथा विसर्जन होत है, सुनहु वीर हनुमान
राम लक्ष्मण जानकी, सदा करो कल्याण

एक घडी आधी घडी, आधीमें पूनी आध
तुलसी संगत संतकी, कटे कोटि अपराध

वाजा वाग्या विधविधना, भरद्वाज के पास
सब देवता आश्रम गये, शंभु गये कैलास

राम कथा अघदाहिनी, जो घर चर्चा होत
करत सुनत नित्य यज्ञ, फल भव सागर के प्रोत

कामि नारी पियाही, जिमि लोभिहि प्रिय दाम
तिमि रघुनाथ निरंतर, प्रिय लागहु मोहि राम

शिवजी कथा के अंतमें, लीजे रघुवीर नाम
एक बार सहु कोई कहो, जय जय सीताराम

अच्युतं केशवं श्री रामनारायणं,
श्री कृष्णदामोदरं श्री वासुदेवं हरिः
श्रीधरं माधवं, श्री गोपीनाथ वल्लभं
श्री जानकी नायकं, श्री रामचंद्र भजे

असत्यो माहेथी प्रभु परम सत्ये तुं लई जा
ऊंडा अंधारेथी प्रभु परम तेजे तुं लई जा

महा मृत्युमांथी अमृत समीपे नाथ लई जा
तुं हीणो हुं छुं तो तुज दर्शनना दान दई जा

# अंजलि गीत

हे नाथ जोडी हाथ पाये प्रेमथी सौ मांगीए,
शरण मळे साचुं तमारूं ए हृदयथी मांगीए.

जे जीव आव्यो आप पासे चरणमां अपनावजो,
परमात्मा ए आत्माने शांति साची आपजो.

वळी कर्मना योगे करी जे कुळमां ए अवतरे,
त्यां पूर्ण प्रेमे ओ प्रभुजी आपनी भक्ति करे.

लखचोराशी बंधनोने लक्षमां लई कापजो,
परमात्मा ए आत्माने शांति साची आपजो.

सुप्त पतित सुविचार सत्कर्मनो दई वारसो,
जनमोजनम सत्संगथी किरतार पार उतारजो.

आ लोकने परलोकमां तव प्रेम रगरग व्यापजो,
परमात्मा ए आत्माने शांति साची आपजो.

मळे मोक्ष के सुख स्वर्गनां आशा उरे एवी नथी,
दियो देह दुर्लभ मानवीनो भजन करवा भावथी.

साचुं बतावी रूप श्री रणछोड हृदये स्थापजो,
परमात्मा ए आत्माने शांति साची आपजो.

## शांति पाठ

ॐ द्यौः शांतिरन्तरिक्ष ॐ शांतिः पृथ्वी शांतिः
रापः शांतिः रोषद्यय: शांतिः वनस्पतय शांतिः
विश्वे देवाः शांतिः ब्रह्मा शांतिः सर्व गुण शांतिः
शांति रेव शांतिः सामा, शांति रे धिः
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

# मा-बापने भूलशो नहीं

भूलो भले बीजुं बधुं, मा-बापने भूलशो नहीं,
अगणित छे उपकार एना, एह विसरशो नहीं.

पथ्थर पूज्या पृथ्वी तणां, त्यारे दीठुं तम मुखडुं,
ए पुनित जननां काळजां, पथ्थर बनी छुंदशो नहीं.

काढी मुखेथी कोळीयो, म्होमां दई मोटा कर्या,
अमृत तणा देनार सामे, झेर उगळशो नहीं.

लाखो लडाव्या लाड तमने कोड सौ पूरा कर्या,
ए कोडना पूरनारना कोड पूरवा भूलशो नहीं.

लाखो कमाता हो भले, मा-बाप जेमां न ठर्या,
ए लाख नहीं पण राख छे, ए मानवुं भूलशो नहीं.

संतानथी सेवा चाहो, संतान छो सेवा करो,
जेवुं करो तेवुं भरो, ए भावना भूलशो नहीं.

भीने सूई पोते अने सूके सुवाड्या आपने,
ए अमीमय आंखने, भूलीने भींजवशो नहीं.

पुष्पो बिछाव्या प्रेमथी, जेणे तमारा राह पर,
ए चाहना राह पर, कंटक क़दी बनशो नहीं.

धन खरचतां मळशे बधुं, माता-पिता मळशे नहीं,
एना चरणनी चाहना, तमो कदी भूलो नहीं.